कविता / पीरज़ादा क़ासिम

अभी तो आप हैं और
आपका जोरे ख़िताबत है
बहुत अल्फ़ाज़ हैं नादिर
बहुत बेसाख़्ता जुमले
अभी तो लबकुशाई आपकी अपनी गवाही है
अभी तो आप हैं जिल्लेइलाही
आप ही की बादशाहत है
अभी तो इल्मो हिकमत
लब्ज़े गौहर आप ही के हैं
अभी सब फैसले
सब मेहरो महम आप ही के हैं
.....
अभी क्या है अभी तो आपका
ज़बूर लहज़े में अयां होगा
अभी तो आपके ही नुक़तो लब से
आपका किस्सा बयां होगा
अभी तो मोहतरम बस आप हैं
खुद अपनी नज़रों में
मोअज्जम मुनक़्क़श अलक़ाब हैं
खुद अपनी नज़रों में
अभी तो गूंजते ऊंचे सुरों में
आप ही हैं नगमाख्वा अपने
.....
अभी तो आप ही कहते हैं
कितना खूब कहते हैं
जो दिल में आये कहते हैं
मगर जब आपकी सीरत पे सारी गुफ़्तगू हो ले
तो ये भी याद रखियेगा
अभी तक हम नहीं बोले।

मोअज्जम - प्रतिष्ठित, मुनक़्क़श - चित्रित, अंकित, अलक़ाब - प्रशस्ति

कैलास गौतम / गान्ही जी

सिर फूटत हौ, गला कटत हौ, लहू बहत हौ, गान्ही जी
देस बंटत हौ, जइसे हरदी धान बंटत हौ, गान्ही जी
बेर बिसवतै रूवा चिरई रोज ररत हौ, गान्ही जी
तोहरे घर क रामै मालिक सबै कहत हौ, गान्ही जी

हिंसा राहजनी हौ बापू, हौ गुंडई, डकैती, हउवै
देसी खाली बम बनूक हौ, कपड़ा घड़ी बिलैती, हउवै
छुआछूत हौ, ऊंच नीच हौ, जात-पांत पंचइती हउवै
भाय भतीया, भूल भुलइया, भाषण भीड़ भंड़इती हउवै

का बतलाई कहै सुनै मे सरम लगत हौ, गान्ही जी
केहुक नांही चित्त ठेकाने बरम लगत हौ, गान्ही जी
अइसन तारू चटकल अबकी गरम लगत हौ, गान्ही जी
गाभिन हो कि ठांठ मरकहीं भरम लगत हौ, गान्ही जी

जे अललै बेइमान इहां ऊ डकरै किरिया खाला
लम्बा टीका, मधुरी बानी, पंच बनावल जाला
चाम सोहारी, काम सरौता, पेटैपेट घोटाला
एक्को करम न छूटल लेकिन, चउचक कंठी माला

नोना लगत भीत हौ सगरों गिरत परत हौ गान्ही जी
हाड़ परल हौ अंगनै अंगना, मार टरत हौ गान्ही जी
झगरा क जर अनखुन खोजै जहां लहत हौ गान्ही जी
खसम मार के धूम धाम से गया करत हौ गान्ही जी

उहै अमीरी उहै गरीबी उहै जमाना अब्बौ हौ
कब्बौ गयल न जाई जड़ से रोग पुराना अब्बौ हौ
दूसर के कब्जा में आपन पानी दाना अब्बौ हौ
जहां खजाना रहल हमेसा उहै खजाना अब्बौ हौ

कथा कीर्तन बाहर, भीतर जुआ चलत हौ, गान्ही जी
माल गलत हौ दुई नंबर क, दाल गलत हौ, गान्ही जी
चाल गलत, चउपाल गलत, हर फाल गलत हौ, गान्ही जी
ताल गलत, हड़ताल गलत, पड़ताल गलत हौ, गान्ही जी

घूस पैरवी जोर सिफारिश झूठ नकल मक्कारी वाले
देखतै देखत चार दिन में भइलैं महल अटारी वाले
इनके आगे भकुआ जइसे फरसा अउर कुदारी वाले
देहलैं खून पसीना देहलैं तब्बौ बहिन मतारी वाले

तोहरै नाव बिकत हो सगरो मांस बिकत हौ गान्ही जी
ताली पीट रहल हौ दुनिया खूब हंसत हौ गान्ही जी
केहु कान भरत हौ केहू मूंग दरत हौ गान्ही जी
कहई के हौ सोर धोवाइल पाप फरत हौ गान्ही जी

जनता बदे जयंती बाबू नेता बदे निसाना हउवै
पिछला साल हवाला वाला अगिला साल बहाना हउवै
आजादी के माने खाली राजघाट तक जाना हउवै
साल भरे में एक बेर बस रघुपति राघव गाना हउवै

अइसन चढ़ल भवानी सीरे ना उतरत हौ गान्ही जी
आग लगत हौ, धुवां उठत हौ, नाक बजत हौ गान्ही जी
करिया अच्छर भइस बराबर बेद लिखत हौ गान्ही जी
एक समय क' बागड़ बिल्ला आज भगत हौ गान्ही जी

आज की संतान... / कोलंबा कालीधर

यहां ले आई हूं से क्या मतलब है तुम्हारा ? तुम्हारे पिताजी तुम्हारे भाई की जिम्मेदारी है। मैंने बड़ा घर वृद्धाश्रम खोलने के लिए नहीं लिया था ,अपने रहने के लिए लिया है।जायदाद के पैसे हड़पते हुए नहीं सोचा था साले साहब ने कि पिता की करनी भी पड़ेगी।

निशा काम निपटा कर बैठी ही थी, की फोन की घंटी बजने लगी।

मेरठ से विमला चाची का फोन था

"बिटिया अपने बाबू जी को आकर ले जाओ यहां से।बीमार रहने लगे है , बहुत कमजोर हो गए हैं। हम भी कोई जवान तो हो नहीं रहें है,अब उनका करना बहुत मुश्किल होता जा रहा है।

वैसे भी आखिरी समय अपने बच्चों के साथ बिताना चाहिए।"

निशा बोली, "ठीक है चाची जी इस रविवार को आतें हैं, बाबू जी को हम दिल्ली ले आएंगे।

"फिर इधर उधर की बातें करके फोन काट दिया। बाबूजी तीन भाई है ,पुश्तैनी मकान है तीनों वहीं रहते हैं। निशा और उसका छोटा भाई विवेक दिल्ली में रहते हैं अपने अपने परिवार के साथ।

तीन चार साल पहले विवेक को फ्लैट खरीदने की लिए पैसे की आवश्यकता पड़ी,तो बाबूजी ने भाईयों से मकान के अपने एक तिहाई हिस्से का पैसा लेकर विवेक को दे दिया था,कुछ खाने पहनने के लिए अपने लायक रखकर।

दिल्ली आना नहीं चाहते थे इसलिए एक छोटा सा कमरा रख लिया था,जब तक जीवित थे तब तक के लिए। निशा को लगता था कि अम्मा के जाने के बाद बिल्कुल अकेले पड़ गए होंगे बाबू जी,लेकिन वहां पुराने परिचितों के बीच उनका मन लगता था। दोनों चाचियां भी ध्यान रखती थी।

दिल्ली में दोनों भाई बहन की गृहस्थी भी मज़े से चल रही थी।

रविवार को निशा और विवेक का ही कार्यक्रम बन पाया मेरठ जाने का। निशा के पति अमित एक व्यस्त डाक्टर है, महिने की लाखों की कमाई है,उनका इस तरह से छुट्टी लेकर निकलना बहुत मुश्किल है, मरीजों की बिमारी न रविवार देखती है न सोमवार।

विवेक की पत्नी रेनू की अपनी जिंदगी है, उच्च वर्गीय परिवारों में उठना बैठना है उसका , इस तरह के छोटे मोटे पारिवारिक पचड़ों में पड़ना उसे पसंद नहीं। रास्ते भर निशा को लगा विवेक कुछ अनमना , गुमसुम सा बैठा है।

वह बोली,"इतना परेशान मत हो, ऐसी कोई चिंता की बात नहीं है, उम्र हो रही है,थोड़े कमजोर हो गए हैं ठीक हो जाएंगे।"

विवेक झींकते हुए बोला,"अच्छा खासा चल रहा था,पता नहीं चाचाजी को एसी क्या मुसीबत आ गई दो चार साल और रख लेते तो।अब तो मकानों के दाम आसमान छू रहे हैं,तब कितने कम पैसों में अपने नाम करवा लिया तीसरा हिस्सा।"

निशा शान्त करने की मन्शा से बोली, "ठीक है न उस समय जितने भाव थे बाजार में उस हिसाब से दे दिए।और बाबूजी आखरी समय अपने बच्चों के बीच बिताएंगे तो उन्हें भी अच्छा लगेगा।"

विवेक उत्तेजित हो गया , बोला,"दीदी तेरे लिए यह सब कहना बहुत आसान है। तीन कमरों के फ्लैट में कहां रखूंगा उन्हें। रेनू से किट किट रहेगी सो अलग, उसने तो साफ़ मना कर दिया है वह बाबूजी का कोई काम नहीं करेंगी। वैसे तो दीदी, लड़कियां हक़ मांग ने तो बडी जल्दी खड़ी हो जाती हैं ,करने के नाम पर क्यों पीछे हट जाती है।

आज कल लड़कियों की शिक्षा और शादी के समय में अच्छा खासा खर्च हो जाता है।तू क्यों नहीं ले जाती बाबूजी को अपने घर, इतनी बड़ी कोठी है ,जियाजी की लाखों की कमाई है ? "निशा को विवेक का इस तरह बोलना ठीक नहीं लगा।

पैसे लेते हुए कैसे वादा कर रहा था बाबूजी से,"आपको किसी भी वस्तु की आवश्यकता हो आप निसंकोच फोन कर देना मैं तुरंत लेकर आ जाऊंगा।बस इस समय हाथ थोड़ा तन्ग है।" नाममात्र पैसे छोडे थे बाबूजी के पास,और फिर कभी फटका भी नहीं उनकी सुध लेने निशा बोली "तू चिंता मत कर मैं ले जाऊंगी बाबूजी को अपने घर।"

सही है उसे क्या परेशानी, इतना बड़ा घर फिर पति रात दिन मरीजों की सेवा करते है,एक पिता तुल्य ससुर को आश्रय तो दे ही सकते हैं।बाबूजी को देख कर उसकी आंखें भर आईं।इतने दुबले और बेबस दिख रहे थे,गले लगते हुए बोली,"पहले फोन करवा देते पहले लेने आ जाती।"

बाबूजी बोलें,"तुम्हारी अपनी जिंदगी है क्या परेशान करता।

वैसे भी दिल्ली में बिल्कुल तुम लोगों पर आश्रित हो जाऊंगा।"

रात को डाक्टर साहब बहुत देर से आएं,तब तक पिता और बच्चे सो चुके थे।खाना खाने के बाद सुकून से बैठते हुएं निशा ने डाक्टर साहब से कहा, "बाबूजी को मैं यहां ले आईं हूं। विवेक का घर बहुत छोटा है, उसे उन्हें रखने में थोड़ी परेशानी होती।

"अमित के एक दम तेवर बदल गए,वह सख्त लहजे में बोला,"

यहां ले आईं हूं से क्या मतलब है तुम्हारा? तुम्हारे पिताजी तुम्हारे भाई की जिम्मेदारी है। मैंने बड़ा घर वृद्धाश्रम खोलने के लिए नहीं लिया था ,अपने रहने के लिए लिया है।जायदाद के पैसे हड़पते हुए नहीं सोचा था साले साहब ने कि पिता की करनी भी पड़ेगी।

रात दिन मेहनत करके पैसा कमाता हूं फालतू लुटाने के लिए नहीं है मेरे पास।"

पति के इस रूप से अनभिज्ञ थी निशा।

"रात दिन मरीजों की सेवा करते हो मेरे पिता के लिए क्या आपके घर और दिल में इतना सा स्थान भी नहीं है।"

अमित के चेहरे की नसें तनीं हुईं थीं,वह लगभग चीखते हुए बोला ,"मरीज़ बिमार पड़ता है तो पैसे देता है ठीक होने के लिए, मैं इलाज करता हूं पैसे लेता हूं।

यह व्यापारिक समझोता है इसमें सेवा जैसा कुछ नहीं है।यह मेरा काम है मेरी रोजी-रोटी है।

बेहतर होगा तुम एक दो दिन में अपने पिता को विवेक के घर छोड़ आओ।"

निशा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। जिस पति की वह इतनी इज्जत करती है वें ऐसा बोल सकते हैं। क्यों उसने अपने भाई और पति पर इतना विश्वास किया? क्यों उसने शुरू से ही एक एक पैसा का हिसाब नहीं रखा ?

अच्छी खासी नौकरी करती थी , पहले पुत्र के जन्म पर अमित ने यह कह कर छुड़वा दी कि मैं इतना कमाता हूं तुम्हें नौकरी करने की क्या आवश्यकता है।

तुम्हें किसी चीज़ की कमी नहीं रहेगी आराम से घर रहकर बच्चों की देखभाल करो। आज अगर नौकरी कर रही होती तो अलग से कुछ पैसे होते,उसके पास या दस साल से घर में सारा दिन काम करने के बदले में पैसे की मांग करती तो इतने तो हो ही जाते की पिता जी की देखभाल अपने दम पर कर पाती।कहने को तो हर महीने बैंक में उसके नाम के खाते में पैसे जमा होते हैं,लेकिन उन्हें खर्च करने की बिना पूछे उसे इजाज़त नहीं थी।भाई से भी मन कर रहा था कह दे शादी में जो खर्च हुआ था वह निकाल कर जो बचता है उसका आधा आधा कर दे।कम से कम पिता इज्जत से तो जी पाएंगे।पति और भाई दोनों को पंक्ति में खड़ा कर के बहुत से सवाल करने का मन कर रहा था,

जानती थी जवाब कुछ न कुछ तो अवश्य होंगे।लेकिन इन सवाल जवाब में रिश्तों की परतें दर परतें उखड़ जाएगी,और जो नग्नता सामने आएगी उसके बाद रिश्ते ढोने मुश्किल हो जाएंगे।सामने तस्वीर में से झांकती दो जोड़ी आंखें जिव्हा पर ताला डाल रहीं थीं।अगले दिन अमित के हस्पताल जाने के बाद जब नाश्ता लेकर निशा बाबूजी के पास पहुंची तो वे समान बांधे बैठें थे।

उदासी भरे स्वर में बोले,"मेरे कारण अपनी गृहस्थी मत ख़राब कर बेटा ।पता नहीं कितने दिन है मेरे पास कितने नहीं।मैंने इस वृद्धाश्रम में बात कर ली है जितने पैसे मेरे पास है, उसमें मुझे वे लोग रखने को तैयार है।ये ले पता तू मुझे वहां छोड़ आ , और निश्चित होकर अपनी गृहस्थी सम्भाल।" निशा समझ गई बाबूजी की देह कमजोर हो गई है दिमाग नहीं।दामाद काम पर जाने से पहले मिलने भी नहीं आया साफ़ बात है ससुर का आना उसे अच्छा नहीं लगा।क्या सफाई देती चुप चाप टैक्सी बुलाकर उनके दिए पते पर उन्हें छोड़ने चल दी।

नजरें नहीं मिला पा रही थी,न कुछ बोलते बन रहा था।

बाबूजी ने ही उसका हाथ दबाते हुए कहा,"परेशान मत हो बेटा , परिस्थितियों पर कब हमारा बस चलता है। मैं यहां अपने हम उम्र लोगों के बीच खुश रहूंगा।" तीन दिन हो गए थे बाबूजी को वृद्धाश्रम छोड़कर आए हुए।

निशा का न किसी से बोलने का मन कर रहा था न कुछ खाने का।

फोन करके पूछने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी वे कैसे हैं ? इतनी ग्लानि हो रही थी कि किस मुंह से पूछे।

वृद्धाश्रम से ही फोन आ गया कि बाबूजी अब इस दुनिया में नहीं रहे। दस बजे थे बच्चे पिकनिक पर गए थे आठ नौ बजे तक आएंगे,अमित तो आतें ही दस बजे तक है। किसी की भी दिनचर्या पर कोई असर नहीं पड़ेगा,किसी को सूचना भी क्या देना। विवेक आफिस चला गया होगा बेकार छुट्टी लेनी पड़ेगी।

रास्ते भर अविरल अश्रु धारा बहती रही कहना मुश्किल था पिता के जाने के ग़म में,या अपनी बेबसी पर आखिरी समय पर पिता के लिए कुछ नहीं कर पायी।तीन दिन केवल तीन दिन अमित ने उसके पिता को मान और आश्रय दे दिया होता,तो वह हृदय से अमित को परमेश्वर का मान लेती। वृद्धाश्रम के सन्चालक महोदय के साथ मिलकर उसने औपचारिकताएं पूर्ण की।

वह बोल रहे थे,"इनके बहू , बेटा और दमाद भी है रिकॉर्ड के हिसाब से। उनको भी सूचना दे देते तो अच्छा रहता।वह कुछ सम्भल चुकी थी बोली, नहीं इनका कोई नहीं है न बहू, न बेटा और न दामाद।बस एक बेटी है वह भी नाम के लिए ।"

सन्चालक महोदय अपनी ही धुन में बोल रहे थे, "परिवार वालों को सांत्वना और बाबूजी की आत्मा को शांति मिले।"

निशा सोच रही थी' बाबूजी की आत्मा को शांति मिल ही गई होगी।जाने से पहले सबसे मोह भंग हो गया था।समझ गये होंगे कोई किसी का नहीं होता, फिर क्यों आत्मा अशान्त होगी।'

"हां, परमात्मा उसको इतनी शक्ति दें,कि किसी तरह वह बहन और पत्नी का रिश्ता निभा सकें।"

आप कह सकते हैं ये तो कहानी है, सच तो नही है। तनिक रुकिये, सच्चाई इससे अलग भी नही है।